International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Special Issue on Innovative Strategies in Multidisciplinary
Research and Analysis | February 2024
Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

ईसाई धर्म-सिद्धांत, परंपरा, विश्वास एवं अवधारणाएँ: एक अवलोकन

Sakib Ali
Research Scholar, Aligarh Muslim University Aligarh, Aligarh, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना-

संसार की उत्पत्ति के बाद सर्वप्रथम चिन्तन एवं मननशील प्राणी 'पुरुष' के रूप में उत्पन्न हुआ । जिसने अपनी परिपक्व बुद्धि के माध्यम से निरन्तर विकास कार्य किया और करता चला आ रहा है। परन्तु स्वयं के विषय में कोई सर्वमान्य मत प्राप्त नहीं कर पाता है। अनेक लोगों के अलग- अलग मत प्राप्त होते हैं। जिसमें से कुछ मतों को प्रसिद्धि प्राप्त हो गयी है और कुछ आज भी निर्जीव अवस्था में पड़े दिखाई देते हैं। तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि संसार में, जब-जब मानव जाति में अत्यधिक अत्याचार चारो ओर आम हो गया था। तब-तब ऐसे समय में उन्हीं मानवों में से एक व्यक्ति ने अंहिसा ,समानता और अधिकार की बात कही इस प्रकार के उपदेशों से लोग प्रभावित होने लगें एवं अत्याचार में कमी आयी। शान्ति के इस विचार को धीरे-धीरे 'सत्य मार्ग' के नाम से पुकारा जाने लगा। जिसने सभी मानव जाति को एक साथ चलने के लिए प्रेरित किया और अन्त में 'धर्म' के नाम से सुशोभित होने लगा।

धर्म- इस जगत में समानता, अधिकार, अहिंसा, निष्ठा एवं शिष्टाचार ये सभी सनातन मार्ग की ओर संकेत करते हैं। सनातन का दूसरा नाम 'सत्य मार्ग' है। यह बाद में विशालकाय धर्म के रूप सामने आया। सनातन धर्म को सिद्धान्तों के कारण लोगों ने बढ़-चढ़ कर स्वीकार करना शुरू कर दिया। वर्तमान में यह शब्द अपनी लोकप्रियता के कारण अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

'धर्म' संस्कृत भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ- 'अत्यन्त विस्तृत' (व्यापक) है। धर्म शब्द जो कि संस्कृत में (ध+र्+म - धर्म) 'धा' धातु से मिलकर बना है। **'धारयति इति धर्मः'** अर्थात- जिसके द्वारा धारण किया जाए, तथा जो नियमानुसार सिद्धान्तों को ग्रहण करने योग्य है। जो 'धारण' करने योग्य है। वह धर्म कहलाता है। जो नियम, कानून एवं सदाचार के साथ अपना जीवन यापन करता है। वह मानव धर्म को धारण करता है। धर्म के विषय में अन्यतर धर्मों में दो समानता दिखाई देती है। कर्मों के आधार पर उसका परिणाम निश्चित किया जाता है। अच्छे कर्मों के लिए 'स्वर्ग' (जन्नत, Heaven) और बुरे कर्मों के लिए 'नर्क' (जहन्नुम, Hell) स्थान प्रचलित हैं।

'महर्षि वेदव्यास' जी ने 'महाभारत' में 'धर्म' की परिभाषा देते हुए कहा है कि- इस संसार में जो कुछ भी न्यायपूर्वक किया तथा धारण होता है। वही 'धर्म' है। अन्याय को अधर्म की संज्ञा दी है।

आरम्भो न्याययुक्तो यः स धर्म इति स्मृतः ।
अन्याय अधर्म इति एतत् शिष्टानुशासनं ।।[1]

अर्थात- न्याय पूर्वक आरम्भ करना ही धर्म है। अन्याय अधर्म है ऐसा शिष्टजनो का उपदेश है।

अंग्रेजी भाषा में धर्म को 'Religion' और उर्दू में 'मजहब' एवं अरबी में 'दीन' कहा जाता है। संसार में सभी धर्मों की मान्यता है कि - जगत को सुचारू रूप से चलाने वाली शक्ति को 'ईश्वर' कहते है। [2]ईश्वर के द्वारा सत्यमार्ग को बताने के लिए अवतार, दूत, संदेष्टा, रसूल, पैगम्बर, भेजे जाते हैं। वे ईश्वरीय वचनों के माध्यम से आम जन-मानस को कल्याण का मार्ग बताने का कार्य करते हैं। सभी मानव वचनों को आधार मानकर अपना-अपना जीवन यापन करते हैं।

ईसाई धर्म का आरम्भ –

प्रत्येक धर्म की यह विशेषता रही है, जो भी धर्म वर्तमान में चल रहा होता है। उसमें कुरीतियाँ,आडम्बर एवं अहिंसा फैली हुयी होती है। इस तरह वह अपने अन्दर विगाड़ पैदा करता है।

जब-जब इस प्रकार की स्थितियाँ चारों तरफ विद्यमान हुई है। तब-तब एक नया धर्म उसी धर्म के बीच से निकल कर सामने आया है।

यहूदी धर्म की सत्ता में चारों ओर विगाड़ पैदा हो चुका था। हर दिशा में खून-खराबा, अधिपत्य, स्त्रीयों के साथ दुर्व्यवहार तथा साधारण इंसान भी अपने जीवन के लिए लड़ रहे थे। इन कठिन परिस्थितियों में कुवारी स्त्री 'मरियम' को ईश्वर की

[1] (म० भा० वनपर्व - 207/77)
[2] इस्लाम का इतिहास : पृष्ठ – ११

कृपा से पुत्र 'ईसा' की प्राप्ति हुयी। ऐसे समय में एक स्त्री विवाह के बिना अपने पुत्र को समाज के सामने कैसे ला सकती थी। लेकिन बात खुलना थी जब यह बात लोगो के सामने आयी तब देखना क्या था। सामाजिक बहिष्कार शुरु हो गया। 'मरियम' ने बड़ी दृढ़ता और निश्चय के साथ 'हजरत ईसा' का पालन-पोषण किया। बाल्यावस्था से 'हजरत ईसा' ने यहूदी धर्म का खण्डन करना शुरू कर दिया। यहीं से ईसाई धर्म की नीव डलना शुरू हुयी । ईसा से पूर्व का समय ईसापूर्व और का बाद का समय ईसवीं के नाम से जाना जाता है।[3]

ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार -

हजरत ईसा ने बचपन से विद्वानों को अपने तर्क-वितर्क से परास्त करना शुरू कर दिया था। जैसे-जैसे ईसा की आयु बढ़ती गयी वैसे-वैसे वह अपने ज्ञान से लोगों को अपनी ओर आकर्षित रहे थे। यहूदियों को इस बात का पता चल चुका था कि एक व्यक्ति है जो उनके धर्म को नकारता है, अपने सत्य वचनों से लोगों को ईश्वरीय ज्ञान देता है। वह कहता कि मैं ईश्वर द्वारा भेजा गया हूँ ताकि तुम्हें सांसारिक दलदल से निकालकर ईश्वर के द्वारा बनाई गयी स्वर्ग में ले जाने का मार्ग बताऊँ। यहूदियों ने अपने धर्म को बचाने के लिए षड्यंत्र रचना शुरू कर दिया। अपनी रियासत में 'ईसा' को मारने की साजिश बना दी गयी। इधर 'ईसा' ने धर्म का प्रचार-प्रसार कुछ समय के लिए छुपकर किया। उन्हें मृत्यु का भय नहीं था 'ईसा' कहते थे कि मृत्यु मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती वह तो ईश्वर से मिलने का एक रास्ता है। लेकिन यहूदियों ने अपने प्रयासों से 'ईसा' को पकड़ लिया। कई दिनों तक एक बन्द जगह पर उनको शारीरिक प्रताड़ना दी गयी। समयानुसार 'ईसा' को मृत्यु दण्ड दिया गया। यहूदियों के धर्म में मृत्यु का तरीका यह था कि - एक लकड़ी के क्रोस पर मानव को लटका कर हाथ-पैरों में कीलें गाड़ना था। यहूदियों की नीति यह भी थी कि 'ईसा' के साथ जितने भी उनके शिष्य थे। सभी को मार दिया जाएँ। यहूदी 'ईसा'को सामान्य मौत नहीं देना चाहते थे। उन्होने 'ईसा' को एक लकड़ी के बड़े-क्रोस पर लटका कर उनके हाथ-पैरों के कीलें ठोंक कर एक बड़ी अंधेरी जगह में बन्द कर दिया। तीन दिन के बाद खोला गया तो उनका शरीर पूरी तरह से खत्म और प्राण निकल चुके थे। इस स्थिति को लेकर विद्वानों के अपने-अपने अलग मत हैं।[4] ईसाई मानते है कि उनकी मृत्यु नहीं हुयी थी वह जिन्दा थे। बाद में वह स्वयं अपने ईश्वर के पास चले गये। दूसरा पक्ष इस बात पर सहमती रखता है कि ईश्वर ने 'ईसा' को सूली पर लटकाने से पहले ही उठा लिया। तीस वर्ष से अधिक आयु में 'ईसा' के साथ यह घटना घटी। जोकि दुनिया को एक नया धर्म और पेहचान देकर चला गया। ईसाई धर्म का प्रसार 'ईसा' की मृत्यु के बाद बहुत तेजी से होने लगा। 'ईसा' ने ईसाई धर्म की सिर्फ नींव रखी थी। धर्म का प्रचार- प्रसार उनके चार शिष्यों ने किया। ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार इतना तेजी से हुआ कि पूरी दुनियाँ में फैल गया। वर्तमान में ईसाई धर्म के मानने वालों की संख्या सबसे अधिक है।

ईसाई धर्म की प्रमुख अवधारणाएँ –

- ईसाईयों का विश्वास है कि ईसा ने लोगों से स्वर्ग में मिलने का वादा किया है।
- ईसा को ईश्वर का पुत्र माना जाता है।
- ईश्वर ने ईसा को, मनुष्यों(लोगों) द्वारा किए जा रहे पापों के परिणामों से बचाने के लिए पृथ्वी पर भेजा।
- एकेश्वरवाद को माना जाता है। अतः ईश्वर एक है
- ईसा ने अपने शरीर को क्रोस (सूली,cross) पर चढ़ाने के लिए दे दिया और तीन दिन के बाद पुनः जीवित हो गये। ईसाई धर्म में यह अवधारणा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।[5]

ईसाई धर्म की प्रमुख नैतिकताएँ –

- जान बूझकर गर्भपात कराना गंभीर अपराध है। (अन्य सभी धर्म इस विषय पर एक मत हैं।)
- मूर्ति पूजा, जादू, ईश्वर की निंदा एवं हत्या करने पर मृत्यु दण्ड का प्रावधान है।
- लोगों की भविष्य में सहायता के लिए अंग दान करना ।
- युद्ध में न्यायपूर्वक सिद्धान्तों का पालन करना।
- पशु बली देना। (जिन पशुयों की बली ईश्वर द्वारा स्वीकार हो।)
- आत्महत्या की निंदा करना, (आत्म हत्या पाप है।)

ईसाई धर्म के पवित्र स्थल एवं ग्रन्थ :

धर्म की शिक्षा देने वाले नबी (अवतार) जिस स्थान पर जन्म लेते है। वह स्थान पवित्र स्थल माना जाता है। जिस स्थान से धर्म की शिक्षा शुरू की गयी हो वह भी पवित्र स्थल होता है। जिन ग्रन्थों में धार्मिक शिक्षा के वचनों को एकत्रित किया जाता है। वह पवित्र धार्मिक ग्रन्थ कहलाते हैं। ईसाई धर्म में पवित्र स्थलों के नाम ईसाई शिक्षा को प्रसारित करने के उद्देश्य से अलग-अलग हैं।

[3] ईसाई धर्म : पृष्ठ- ४,५

[4] विश्व धर्म : पृष्ठ- ३६३,३७०,३७७

[5] Christianity an Introduction : Page- 100

- वेतलेहेम (Bethlehem) ईसा की जन्मस्थली होने के कारण पवित्र स्थान है।
- सेफोरिया (Sephoria)
- यरुशलेम (Jerusalem)

यह दुनियाँ के सबसे पुराने शहरों में से एक है। साथ ही यह शहर कई धार्मिक स्थलों के केन्द्र हैं। यरुशलेम से सबसे पहले यहूदी धर्म निकला। उसके बाद ईसाई और अन्त में इस्लाम धर्म निकला। इसी कारण से यह तीनों धर्मों का पवित्र स्थान है। वर्तमान में तीनों धर्मों के द्वारा साझा किए जाने वाले स्थान को "**माउंट टेंपल**" के नाम से जाना जाता है। ईसा के निधन के पश्चात उनके वचनों को एक ग्रन्थ में इकट्ठा किया गया। जिसे "बाइबल" का नाम दिया गया। बाइबल पवित्र ग्रन्थ होने के साथ-साथ उपदेशों, गीतों,कहानियों, इतिहास एवं साहित्य का भी एक कोश ग्रन्थ है। यह दो भागों में विभक्त है।

- पहला (Old Testament) पुराना नियम।

इसे हिब्रू बाइबल के नाम से भी जाना जाता है।

- दूसरा (New Testament) नया नियम।

यह 165 ईसा पूर्व से लेकर 1200 ई० के बीच अलग-अलग समय एवं स्थानों पर लिखा गया है।

अतः - बाइबल ईसाई धर्म का पवित्र ग्रन्थ है। [6]

ईसाई धर्म में प्रार्थना एवं प्रतीक –

ईश्वर की आराधना से जीवन मुक्त होने का प्रत्येक धर्म में अपना-अपना तरीका है। किसी स्थान को पवित्र मान कर शांत चित्त से ईश्वर की आराधना करने के स्थान को पवित्र स्थान कहते हैं। ईसाई धर्म में इस पवित्र स्थान को 'चर्च' के नाम से जाना जाता है। ईसाई धर्म में यह स्थान ईश्वर की प्रार्थना के लिए साधक सिद्ध होता है।

- सप्ताह में एक दिन चर्च जाना अनिवार्य है। इस दिन ईसा की मृत्यु एवं उनके दु:खों के विषय में बोल कर प्रार्थना की जाती है। ईसा संसार में जन्म लेकर दुबारा आयेंगे ऐसा विश्वास है।
- हर गुरुवार के दिन चर्च में प्रार्थना के रूप में निम्न बिषय का पाठ किया जाता है।

1. पवित्रता का मार्ग
2. सामाजिक न्याय का मार्ग
3. प्रार्थना एवं भक्ति का मार्ग
4. चिंतनशील मार्ग
5. करिशमाई मार्ग

ईसा मसीह को जिस स्थान पर लटकाया गया था। वह स्थान क्रोस के रूप में बना हुआ था। ईसाई धर्म के लोगों ने क्रोश (cross) को धर्म के अलग-अलग प्रतीकों के रूप में स्वीकार कर लिया। प्रतीक के माध्यम से अनेक विषयों को प्राप्त करने का मार्ग बताया गया है।

- दु:ख और हार का
- मृत्यु और मोक्ष का

अतः क्रोश (Cross) ईसाई धर्म का एक सार्वभौमिक प्रतीक है।

पवित्र दिन –

ईसाई धर्म के अनुसार वर्ष के 365 दिनों में मात्र 16 दिनों को पवित्र माना जाता है। जिसमें प्रमुख दिन निम्न है।

- **कैण्डलमास (Candlemas)** - मरियम ने ईसा के जन्म के 40 दिन के बाद कैण्डलमास मनाया। जो ईसा की शुद्धीकरण के रूप में मनाया जाता है।
- **क्रिसमस (Christmas)** - क्रिसमस ईसाई धर्म में पवित्र दिन के रूप में मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि 25 दिसम्बर को ईसा का जन्म हुआ । ईसाई क्रिसमस दिन को ईसा के जन्मदिन के रूप में मनाते हैं। वर्तमान में जन्म दिन की अवधारणा ईसाई धर्म की देन है।
- **पवित्रसप्ताह (Holy week)** - यह दिन ईसा के (ईश्वर के पास चले जाने के बाद) आखरी दिन के रूप के बनाया जाता है। इस दिन ईसा के जीवन के अंतिम सप्ताह को याद करते हैं। 'पाम' गुरुवार से पवित्र सप्ताह की शुरुआत होती है।

निष्कर्ष -

धर्म मानव जीवन को सुखपूर्वक एवं शान्ति के साथ जीवन-यापन करने का मार्ग बताता है। वर्तमान समय में संसार में अनेक धर्म हैं अधिकतर धर्मों में समानता दिखाई देती है। यह मुख्य समानताएँ मिलजुल कर जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं। आज के समय में धर्म और वचन सिर्फ ग्रन्थों में ही लिखे रह गये हैं। वास्तविक जीवन में धार्मिक वचनों प्रभाव बहुत कम दिखाई देता है। अतः धार्मिक सद्भाव बनाए रखने हेतु अन्य सभी धर्मों का सामान्य ज्ञान होना अतिआवश्यक है।

सन्दर्भ-

[1] एच ० राय गुप्त, विश्व धर्म परिचय, सहारमपुर, अर्जेन्ट प्रि० प्रेस, 1954

[2] योहन फाइस, एस॰ जे॰, ईसाई दर्शन: इतिहास और सिद्धान्त, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1982

[6] Christianity an Introduction : Page- 57,84

[3] विलाडेसा, आर, एंड, मस, एम, फ़ाउंडेशन ऑफ थियोलॉजिकल स्टडी: ए सौर्स, बुक, न्यूयॉर्क, पोलिस्ट, 1991

[4] मैक्ग्रैथ, एलिस्टर ई, एन इन्ट्रोडक्शन टू क्रिशिचयैनिटी, सेकंड एडिशन, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवेल, 1997

[5] शौरी अरुण, भारत में ईसाई धर्म प्रचार तंत्र, दरियागंज, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन,2014

[6] स्वामी सत्य भक्त, ईसाई धर्म, (Data Resorce-E-pustakalya)

[7] अताउर्रहमान जियाउल्वा, इस्लाम का इतिहास, Islam House.com 2013-1434

[8] Wace Henry, A dictionary of Christian Biography and Literature to the end of sixth Century A.D., with an account of the principle sects and Heresies, Calvin University, Grand Rapids, MI: Christian Library,2000

[9] Fleming Don, The Christian's Life, Brisbane Australia, Bridgeway Publication 2001

[10] Dollahite David C, Christinity and Families, USA, Brigham young University 2016

[11] www.wikipedia.com

[12] https://www.bbc.co.uk/religion/religions

[13] https://www.britannica.com

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470